

## भारत-UK संबंध

यह एडिटरियल 19/04/2022 को 'इंडियन एक्सप्रेस' में प्रकाशित "A New Shine To Old Ties" लेख पर आधारित है। इसमें UK के साथ भारत के द्विपक्षीय संबंधों में हाल की प्रगति और उनके संबंधों में मौजूद प्रमुख अड़चनों के बारे में चर्चा की गई है।

## संदर्भ

यूनाइटेड किंगडम के साथ भारत के संबंधों की वर्तमान स्थिति उनकी संभावनाओं के बारे में दोनों देशों में व्याप्त निराशा के विपरीत है।

उपनिवेशवाद की प्रतिकूल वरिसतों ने अतीत में दोनों पक्षों के लिये एक विकल्पपूर्ण संबंध को आगे बढ़ाना असंभव बना रखा था। लेकिन पछिले कुछ वर्षों में भारत और UK ने भावना एवं असंतोष को पीछे रखते हुए एक आशाजनक और व्यावहारिक संलग्नता की शुरुआत की है।

दोनों देशों के विदेश मंत्रियों की देखरेख में दोनों देशों की नौकरशाही वर्ष 2030 तक द्विपक्षीय संबंधों को रूपांतरित कर सकने के लिये एक रोडमैप पर कार्य कर रही है।

## UK के साथ भारत के संबंधों में हाल की प्रगति

- यूक्रेन संकट से उत्पन्न चुनौती के बावजूद भारत-ब्रिटेन संबंध एक ऊर्ध्वगामी प्रक्षेपवक्र पर रहा है जिसकी पुष्टि वर्ष 2021 में संपन्न हुई व्यापक रणनीतिक साझेदारी (Comprehensive Strategic Partnership) से परिलक्षित होती है।
  - इस समझौते ने भारत-UK संबंधों के लिये वर्ष 2030 के रोडमैप का भी निर्माण किया जो मुख्य रूप से द्विपक्षीय संबंधों के लिये साझेदारी योजनाओं की एक रूपरेखा तैयार करता है।
- ब्रिटेन की विदेश सचिव ने अपनी हाल की यात्रा में आक्रमक देशों पर नयितरण के लिये लोकतांत्रिक देशों के बीच सहयोग के महत्त्व को रेखांकित करते हुए रूसी आक्रमण का मुकाबला करने और रूस पर वैश्विक रणनीतिक निर्भरता को कम करने की आवश्यकता पर जोर दिया।
- उन्होंने दोनों देशों के बीच रक्षा-संबंधी व्यापार और साइबर सुरक्षा एवं रक्षा सहयोग को गहरा करने की दिशा में भी बातचीत को आगे बढ़ाया।
  - भारत और UK में ऑनलाइन अवसंरचना की सुरक्षा के लिये एक नए संयुक्त साइबर सुरक्षा कार्यक्रम की भी घोषणा की जानी है।
  - भारत और UK अपना पहला 'स्ट्रैटेजिक टेक डायलॉग' आयोजित करने की भी योजना बना रहे हैं जो उभरती प्रौद्योगिकियों पर एक मंत्रसिंतीय शिखर सम्मेलन होगा।
- इसके अतिरिक्त, UK और भारत समुद्री क्षेत्र में भी अपने सहयोग को मज़बूत करने पर सहमत हुए हैं जहाँ UK भारत के हिंदी-प्रशांत महासागरीय पहल (Indo-Pacific Oceans Initiative) में शामिल होगा और दक्षिण-पूर्व एशिया में समुद्री सुरक्षा वषियों पर एक प्रमुख भागीदार देश बनेगा।
- जनवरी 2022 में भारत-UK मुक्त व्यापार समझौते के लिये पहले दौर की वार्ता भी संपन्न हुई।
  - इस वार्ता ने दुनिया की पाँचवीं (UK) और छठी (भारत) सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बीच एक व्यापक सौदे को संपन्न की साझा महत्वाकांक्षाओं को दर्शाया, जहाँ दोनों पक्षों के प्रौद्योगिकी वशिषज्जों ने 26 नीतिक्षेत्रों को शामिल करते हुए 32 से अधिक सत्रों को कवर किया।

## उन्नत भारत-UK संबंधों में अन्य देशों की भूमिका

- **अमेरिका:** भारत और ब्रिटेन के बीच द्विपक्षीय संबंधों को रूपांतरित करने में अमेरिका की केंद्रीय भूमिका रही है। अमेरिका द्वारा भारत को एक उभरती हुई वैश्विक शक्ति और हिंदी-प्रशांत क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण भागीदार के रूप में चिह्नित किये जाने ने ब्रिटेन का भी ध्यान भारत की ओर आकर्षित किया।
  - यह अमेरिका ही था जिसने अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में भारत के तेज़ी से बढ़ते सापेक्षिक महत्त्व को सबसे पहले पहचाना। 20वीं सदी के अंत तक अमेरिका ने भारत के उदय में सहायता करने की अपनी नीति का अनावरण इस दृष्टिकोण से कर लिया कि एक मज़बूत भारत एशिया और विश्व में अमेरिकी हितों की पूर्ति करेगा।
- **चीन:** अमेरिका के लिये भारत के उदय में सहायता करने की रणनीतिक प्रतबिद्धता चीनी प्रभुत्व वाले एशिया के संभावित खतरों की पहचान में नहिं थी।

- पछिले दो दशकों में UK और चीन ने उत्कृष्ट द्विपक्षीय संबंध साझा किए; इनमें से पहले दशक को वर्ष 2015 में चीन के साथ संबंधों का 'स्वर्णमि दशक' घोषित किया गया था।
- हालाँकि, चीन की वसितारवादी नीतियों और चीनी शक्ति के साथ अमेरिका के टकराव के कारण ब्रिटेन ने भी एक महत्त्वपूर्ण भागीदार के रूप में भारत के साथ अपने स्वयं के 'हृदि-प्रशांत झुकाव' की तलाश कर ली।

## भारत-UK साझेदारी क्यों महत्त्वपूर्ण है?

- **UK के लिये:** भारत हृदि-प्रशांत क्षेत्र में बाजार हस्तिसेदारी और रक्षा दोनों ही वषियों में UK के लिये एक प्रमुख रणनीतिक भागीदार है जो वर्ष 2015 में भारत और UK के बीच 'रक्षा एवं अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा साझेदारी' (Defence and International Security Partnership) पर हस्ताक्षर द्वारा रेखांकित भी हुआ।
  - ब्रिटेन के लिये भारत के साथ सफलतापूर्वक FTA का संपन्न होना 'ग्लोबल ब्रिटेन' की उसकी महत्त्वाकांक्षाओं को बढ़ावा देगा क्योंकि UK 'ब्रेग्जिट' (Brexit) के बाद से यूरोप से परे भी अपने बाजारों के वसितार की आवश्यकता और इच्छा रखता है।
  - ब्रिटेन एक गंभीर वैश्विक अभिकर्ता के रूप में वैश्विक मंच पर अपनी जगह सुदृढ़ करने के लिये हृदि-प्रशांत क्षेत्र की विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में अवसरों का लाभ उठाने की कोशिश कर रहा है।
    - भारत के साथ अच्छे द्विपक्षीय संबंधों के साथ वह इस लक्ष्य को बेहतर ढंग से हासिल कर सकने में सक्षम होगा।
- **भारत के लिये:** ओमान, सिंगापुर, बहरीन, केन्या और हृदि महासागर के ब्रिटिश क्षेत्रों में नौसैनिक सुविधाओं के साथ UK हृदि-प्रशांत क्षेत्र में एक प्रमुख क्षेत्रीय शक्ति है।
  - UK ने भारत में नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग का समर्थन करने के लिये 70 मिलियन पाउंड ब्रिटिश अंतरराष्ट्रीय निवेश निधिका भी पुष्टि की है, जो इस क्षेत्र में नवीकरणीय ऊर्जा अवसंरचना के निर्माण और सौर ऊर्जा के विकास में मदद करेगी।
  - भारत UK से भारतीय मतस्य क्षेत्र, फार्मा और कृषि उत्पादों के लिये आसान बाजार पहुँच की मांग रखता है, साथ ही शर्म-गहन नरियात के लिये शुल्क रियायत की भी अपेक्षा करता है।

## भारत-UK संबंधों में प्रमुख अडचनें क्या रही हैं?

- **औपनिवेशिक दृष्टि:** ब्रिटेन के साथ भारत की संलग्नता कई वरिधाभासों का शिकार रही है। भारत का उत्तर-औपनिवेशिक असंतोष और उपमहाद्वीप में एक वरिष भूमिका रखने के ब्रिटेन के असवीकार्य दावे ने दोनों देशों के बीच एक अंतहीन संघर्ष को जन्म दिया।
  - देश वभिजन के परणामों और शीत युद्ध की स्थिति ने दोनों देशों के लिये एक सतत साझेदारी का निर्माण करना कठिन बना दिया।
  - हालाँकि हाल में क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय उथल-पुथल ने पारस्परिक रूप से लाभकारी संलग्नता के लिये दोनों देशों को एक नया आधार प्रदान किया है।
- **पाकस्तानी आयाम:** पाकस्तान भी ब्रिटेन के साथ भारत के द्विपक्षीय संबंधों में एक बड़ी बाधा रहा है। ब्रिटेन द्वारा पाकस्तान की हमियात करना भारत के लिये हमेशा से चिंता का वषिय रहा है।
  - अमेरिका और फ्रॉन्स—जो दक्षिण एशिया में 'इंडिया फ्रंसट' की रणनीति हेतु प्रतबिद्ध हैं, के वषिरीत ब्रिटेन भारत के लिये अपने नए उत्साह और पाकस्तान के प्रत अपने ऐतहिसिक झुकाव की जड़ता के बीच फँसा रहा है।
- **ब्रिटेन की घरेलू राजनीति:** ब्रिटेन की घरेलू राजनीति ने भी भारत के साथ उसके संबंधों में एक रुकावट को अवसर दिया है।
  - दलिली में एक प्रचलित धारणा यह रही थी कि UK की लेबर पार्टी भारत के प्रत सहानुभूति रखती है जबकि कंजर्वेटिव पार्टी ऐसी भावना नहीं रखती। यद्यपि यह भ्रमति दृष्टिकोण ही साबति हुआ और भारत के प्रत वैमनस्य कसिी न कसिी रूप में हमेशा वदियमान रहा।
    - लेबर पार्टी भी भारत के आंतरिक मामलों (कश्मीर सहति) में हस्तक्षेप से पीछे नहीं रही है।

## भारत-ब्रिटेन संबंधों को कैसे मज़बूत किया जा सकता है?

- **पोस्ट-ब्रेग्जिट ब्रिटेन को अपने ऐतहिसिक संबंधों का सर्वश्रेष्ठ उपयोग करने की ज़रूरत है;** यूरोपीय संघ से बाहर निकलने के बाद उसे अधिकाधिक भागीदारों की आवश्यकता है और एक उभरता हुआ भारत उसके लिये स्वाभाविक रूप से शीर्ष रणनीतिक और आर्थिक प्राथमिकताओं में से एक है।
  - भारत और UK दोनों ही हृदि-प्रशांत क्षेत्र में और साथ ही वैश्विक स्तर पर रणनीतिक एवं रक्षा-संबंधी मुद्दों पर सहयोग को बढ़ावा देने के लिये वरिसत की समस्याओं को नयितरति करने और टोस संवाद में शामिल होने के प्रत गंभीर हैं।
  - इधर दूसरी ओर भारत UK के साथ संलग्नता में अब अत्यधिक आत्मवशवास रखता है; अगले कुछ वर्षों में भारतीय अर्थव्यवस्था द्वारा ब्रिटेन को पीछे छोड़ देने के आकलन के साथ अब भारत रक्षात्मक रुख नहीं रखता।
- **ब्रिटेन वशिव की पाँचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का एक स्थायी सदस्य, एक वैश्विक वतितीय केंद्र, तकनीकी नवाचार का केंद्र और एक प्रमुख साइबर शक्ति होने की क्षमता है।** वह उल्लेखनीय अंतरराष्ट्रीय सैन्य उपस्थिति और व्यापक राजनीतिक प्रभाव भी रखता है।
  - भारत को अपने रणनीतिक लाभ के लिये UK की इस स्थिति तथा शक्तियों का लाभ उठा सकने के लिये और अधिक प्रयास करना चाहिये।
  - ब्रिटिश प्रधानमंत्री की आगामी भारत यात्रा गत्यात्मक रूप से बदलती वैश्विक व्यवस्था में भारत की भूमिका के महत्त्व को दर्शाती है जहाँ भारत आने वाले समय में कई प्रमुख वदिशी नेताओं की मेजबानी के लिये और वर्ष 2023 में G20 की अध्यक्षता हेतु तैयार है।
  - ब्रिटिश प्रधानमंत्री की आगामी यात्रा के दौरान भारत-UK FTA पर वारता को आगे बढ़ाना प्राथमिक वषियों में से एक होना चाहिये।
  - फनिटेक, बाजार वनियमन, सतत् एवं हरति वति और साइबर सुरक्षा इस संलग्नता के नए मोर्चे के रूप में उभर सकते हैं।

**अभ्यास प्रश्न:** "नई भू-राजनीतिक वास्तविकताएँ UK और भारत से एक नई रणनीतिक दृष्टि की मांग रखती हैं। यह अवसर का लाभ उठाने और एक ऐसी साझेदारी की नींव रखने का उपयुक्त समय है जो 21वीं सदी की चुनौतियों का सक्षमता से मुकाबला कर सके।" टपिणी कीजिये।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/the-india-uk-relationship>

